1.1 प्रस्तावना

राजनीति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों का कोई समूह निर्णय लेता है। समान्यतः यह शब्द असैनिक सरकारों के अधीन व्यवहार के लिए प्रयुक्त होता है किन्तु राजनीति मानव के सभी सामूहिक एवं धार्मिक व्यवहारों (यथा-औद्योगिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं में) सदा से उपस्थित तत्व रहा है। राजनीति उन सामाजिक सम्बन्धों से बना है जो सत्ता और शक्ति के लिए होता है।

किसी भी राजनीति के बारे में जब सोचते है तो लोकतंत्र की परिभाषा को देखना भी महत्वपूर्ण है। अब्राहम लिंकन लोकतंत्र की परिभाषा देते हुए कहते है, ''लोकतंत्र वह होगा जो जनता का जनता के द्वारा हो तथा जनता के लिए हो।'' लेकिन लोकतंत्र के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर कहते हैं, ''जनतंत्र सार्वजनिक जीवन जीने की पद्धति है। जनतंत्र की जड़े व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों में खोजनी पड़ती हैं। जनतंत्र एक ऐसी शासन प्रणाली है, जिसके द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में रक्त की एक भी बूंद न बहाते हुए क्रांतिकारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान बनाते समय व्यक्ति के मूलभूत अधिकारों के संबंध में प्रभावशाली भूमिका निभायी थी। रंग, वर्ण, जाति और लिंग के परे जाकर मनुष्य की मनुष्य के रूप में पहचान हो ऐसा उनका आग्रह था। ऐसी पहचान अगर हो तो जनतंत्र मजबूत हो सकता है, ऐसा उनका विश्वास था।

इस प्रकार राजनीतिक विचारों से प्रभावित होकर कांशीराम ने डॉ. अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों एवं कार्यो को अपने जीवन में आत्मसात करते हुए अपने राजनीतिक आंदोलन की शुरूआत की। 25 अप्रैल 1948 को लखनऊ में भाषण देते हुए डॉ. अम्बेडकर ने जोर देकर कहा था, 'राजनैतिक शक्ति ही सर्वांगीण विकास की चाबी है,।

साथ ही उन्होंने दलितों को समझाया कि अगर दलित और अन्य पिछड़ी जातियां आपस में मिल जाये तो वह तथाकथित उच्च जातियों द्वारा हड़पी गयी अपनी सत्ता को वापिस प्राप्त कर सकते है। इस भाषण से कांशीराम जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस भाषण से प्रभावित होकर कांशीराम ने अपना पूरा जीवन दलित राजनीति आंदोलन सफल बनाने में लगाया।

कांशीराम जी ने कहा मेरा मुख्य मकसद सामाजिक रूपांतरण और आर्थिक मुक्ति है। इसके लिए हमें शुरूआती तौर पर राजनीतिक प्रभाव चाहिए और अंतिम तौर पर राजनीतिक सत्ता चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि राजसत्ता वह चाबियों की चाबी है जिससे हर ताला खुल जाता है।

कांशीराम साहब कहते थे - 'किसी भी आंदोलन की सफलता के लिए विचारधारा और संगठन की आवश्यता पड़ती है। विचारधारा स्थिरता एवं परिवर्तन दोनों के लिए आवश्यक है। इसलिए उन्होंने अपनी राजनीतिक रणनीति को सफल बनाने के लिए प्रथमतः 06 दिसम्बर 1978 को सरकारी कर्मचारियों के एक संगठन 'बामसेफ' (आल इण्डिया बैकवर्ड 'अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग, एण्ड माइनरिटी कम्युनिटिज एम्लाईज फेडरेशन) का गठन करके अपनी राजनीतिक रणनीति को सफल बनाने के लिए जमीन तैयार कर ली थी। बामसेफ के

सभी सदस्य सरकारी कर्मचारी होने के कारण राजनीतिक आंदोलन में भाग नहीं ले सकते थे। इसलिए कांशीराम ने 06 दिंसबर 1981 में डी. एस. फोर (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति नामक संगठन का निर्माण किया। कोई भी सरकारी कर्मचारी इसका सदस्य नही बन सकता था। यद्यपि यह एक राजनीतिक दल नही था, किन्तु इसकी गतिविधियाँ काफी कुछ वैसी थी।

इस संगठन के माध्यम से कांशीराम ने अपने राजनीतिक रणनीति को एक नई दिशा प्रदान करते हुए 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी'' का गठन किया और अपने सामाजिक आंदोलन को एक राजनीतिक आंदोलन में बदल दिया।

भारतीय संविधान की मूल भावना के अनुसार समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना करने की दिशा में 'भारतरत्न' बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के पश्चात् यदि किसी ने सुनियोजित, सुव्यवस्थित, सुसंगठित व क्रमबद्ध तरीके से कार्य किया है तो वह नाम है - मा. कांशीराम जी का।

मान्यवर कांशीराम जी जो कि स्वंय एक वैज्ञानिक थे, अतएव उन्होंने 'सामाजिक परिवर्तन' का कार्य भी वैज्ञानिक तरीके से ही किया है। मान्यवर कांशीराम जी आज हमारे बीच नहीं है। वे महान दर्शनिक, प्रखंड विद्वान, कुशल 'आर्गनाइजर' व सामाजिक परिवर्तन आंदोलन के महान योद्धा थे। उनके विचार आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे। दुःखद है कि वे अपने विचारों को जन-जन तक पहुंचाने की धुन में बहुत लिख नहीं सके। उन्होंने कुछ पम्पलेट, फोल्डर तथा एकमात्र पुस्तक अंग्रेजी में 'द चमचा एज' ही लिखी है। यद्यपि उन्होंने 'द आप्रेस्ड

इण्डियन,' 'बहुजन टाइम्स' तथा 'बहुजन संगठक' नामक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।

वर्तमान में जब हम देखते हैं तो कांशीराम की राजनैतिक रणनीति के आधार पर ही भारत के सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में उनके राजनीतिक विचारों की एक ही बार नहीं बल्कि चार बार बहुजन समाज पार्टी की सरकार बनी है। इतना ही नही उनके द्वारा स्थापित बहुजन समाज पार्टी भारत की तीसरे नम्बर की राष्ट्रीय पार्टी है। आज उन्हीं की राजनीतिक रणनीति का भारत के राजनीति पर एक अलग सा प्रभाव दिखायी पड़ता है।

इस विषय में शोध करने हेतु तथा मान्यवर कांशीराम ने प्रजातंत्र में वोट की कीमत तथा उसके सही प्रयोग के बारे में ही बहुजनों को जागृत किया बल्कि उन्होंने उन्हें भागीदारी के लिए भी जगाया। कांशीराम की राजनीतिक रणनीति का अध्ययन करके शोधकार्य करने की मेरी रुचि हुई।

किसी भी विषय का चयन कर शोध कार्य इसलिए किया जाता है कि उस विषय में मानव के विकास हेतु किस तरह के प्रावधान किए गये हैं । शोध कार्य में पुराने तथ्यों की जाँच पड़ताल की जाती है तथा नये तथ्य खोज निकाले जाते हैं । यह शोध किये गये विषय का आनेवाली पीढ़ी के शोधकार्यकर्ता को एक मार्गदर्शक के रूप में सहयोग होता है। शोध कार्य करने का अथवा किसी विषय का अध्ययन करने का महत्व होता है।

दलित आंदोलन के इतिहास में दलितों द्वारा अपनी पृथक राजनैतिक अस्मिता हेतु अनेक प्रयास किये गये। परंतु बाबा साहब डॉ. आंबेडकर ने दलितों के पृथक राजनैतिक आधिकारों हेतु 1936 में पहले

इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी का गठन किया और फिर इसके माध्यम से चुनाव भी लड़ा। संभवतः यह दलितों का प्रथम आत्मनिर्भर राजनैतिक दल था। इसके पश्चात् बाबा साहेब ने सन् 1942 में 'शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन' का गठन किया। इसका एक मात्र लक्ष्य था कि दलितों को अखिल भारतीय स्तर पर संगठित कर उन्हें पृथक राजनैतिक अस्मिता प्रदान की जाये। परंतु इस लक्ष्य को कांग्रेस ने सत्ता के बल पर दलितों को अपने साथ कर सफल नहीं होने दिया।

भारतीय राजनीति में दलित शक्ति का प्रतीक बनकर उभरे कांशीराम दलितों को हाशियें से निकालकर राजनीति के रंगमंच के केन्द्र में लाने वाले कांशीराम अपने राजनीतिक कौशल के चलते प्रमुख राष्ट्रीय दलों को भी तगड़ा झटका देने में कामयाब रहे। स्वतंत्रता के बद दलित आंदोलन के सबसे बड़े पुरोधा कांशीराम ने अंबेडकर के संघर्ष को आगे बढ़ाया। डॉ अंबेडकर का अनुसरण करते हुए दलित नेताओं ने जिस रिपब्लिकन पार्टी की स्थापन की वह साठ के दशक में बिखर गई। सत्तर के दशक में जब दलित राजनीति पुनः तपनी शूरू हुई तब कांशीराम ने उसे पहचाना और 14 अप्रैल 1984 को बाबासाहब के जन्मदिन के अवसर पर 'बहुजन समाज पार्टी' की स्थापना की। दलितों में आत्मनिर्भर राजनीतिक चेतना अपने विकसित रूप में सन् 1984 में बसपा के रूप में फिर प्रकट हुई और बसपा के विकास के साथ-साथ आज यह नई ऊंचाईयों को छू रही है।

इसलिए इस विषय में शोध करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस विषय में शोध करने से आने वाली पीढ़ी को दलित समाज का राजनैतिक इतिहास समझ में आयेगा ताकि वह भी एक नया राजनैतिक इतिहास बनाने में कामयाब होंगे। क्योंकि डॉ. बाबासाहब अंबेडकर कहते थे, 'जो

समाज अपना इतिहास भूल जाता है वह समाज कभी इतिहास नहीं बना सकता।' इसलिए इस विषय का महत्व समझकर मैंने अपने शोध विषय ''कांशीराम की राजनीतिक रणनीति : एक आलोचनात्मक अध्ययन'' इस विषय का अध्ययन कर शोध कार्य करने का मेरा मन हुआ है। आलोचनात्मक अध्ययन की दृष्टि से यह शोध कार्य किया जायेगा।